REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2026

छत्तीसगढ़ के प्रमुख त्यौहार एवं महत्व का अध्ययन

डॉ. ज्योतिमा पटेल

सारांश –

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत समृद्ध और गहन ही जिसमें वैदिक परमारओं से लेकर जनजातीय आस्थाओं तक विविध पत्र समाहित है। यहाँ के लोक जीवन में गीत संगीत नृत्य पर्व त्यौहार तथा धार्मिक अनुष्ठान जीवन के प्रत्येक चरण से जुड़े हुए है लोक परम्पराएँ जैसे सुआ नृत्य न केवल सामाजिक स्मृतियों को भी सुरक्षित रखते है जैसा कि सामाजशास्त्री क्लिफर्ड जीत (Calefford Geet 2 1993) में कहा है। सांस्कृतिक मानव जीवन के लिए अर्थ करने वाली व्यवस्था है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक भी इसी के अर्थव्यवस्था की निर्मित में अपना विशिष्ट मतदान देता है।

छत्तीसगढ़ को त्यौहारों की धरती भी कहा जाता है क्योकि साल भर अलग–अलग लोक पर्व मनाऐं जाते है।

छत्तीसगढ़ के त्यौहारों का महत्व –

1) यह छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा और अनोखा त्यौहार है।
2) यह लगभग 75 दिनों तक चलता है जो भारत का सबसे बड़ा दशहरा उत्सव माना जाता है।
3) इसमें देवी दंतेश्वरी माता की पूजा होती है और आदिवासी परम्पराएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती है।
4) पूरे क्षेत्र के लोग मिलकर रथ यात्रा और धार्मिक अनुष्ठान करते है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख त्यौहार –

1) हरेली त्यौहार – हरेली छत्तीसगढ़ का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कृषि पर्व माना जाता है यह सावन मास की अमावस्या को मनाया जाता है और इसका संबंध हरियाली तथा कृषि से है।

हरेली त्यौहार का महत्व –

1) यह त्यौहार खेती किसानी की शुरूआत का प्रतीक है।
2) किसान इस दिन अपने कृषि उपकरणों की पूजा करते है।
3) गाय–बैल और अन्य पशुओं को विशेष रूप से सजाया जाता है।
4) बच्चे गेढ़ी खेलते है जो इस पर्व की विशेष परम्परा है हरेली का मुख्य संदेश प्रकृति और कृषि के प्रति सम्मान प्रकट करता है यह पर्व किसानों के जीवन में उत्साह और आस्था का संचार करता है।

2) पोला त्यौहार – पोला छत्तीसगढ़ का प्रमुख कृषि पर्व है जो भाद्रपद अमावस्या को मनाया जाता है यह त्यौहार बैलो के सम्मान में मनाया जाता है, क्योंकि खेती में बैलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विशेषताएँ –
1) यह पर्व भगवान राम की विजय से अधिक देवी दंतेश्वरी की पूजा से जुड़ा है।
2) इसमें आदिवासी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
3) विशाल रथयात्रा और पारंपरिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते है।

त्यौहार का महत्व –
बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृत और धार्मिक आस्था का प्रतीक है।

3) छेर–छेरा त्यौहार – छेर–छेरा छत्तीसगढ़ का एक लोक पर्व है जो पौष पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन बच्चे और युवक घर–घर जाकर छेर–छेरा कहते हुए अन्न और दान मांगते है।

महत्व – 1) यह त्यौहार दान और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।
2) समाज में समानता और सामूहिकता की भावना विकसित करता है।

4) मड़ई मेला – मडई छत्तीसगढ़ ग्रामीण और जनजातीय का प्रमुख मेला है इसमें लोकनृत्य लोकगीत और पारंपरिक बाजार का आयोजन होता है।

मड़ई मेला की विशेषताएँ –
1) विभिन्न गावों में अलग–अलग समय पर आयोजित होता है।
2) स्थानीय देवताओं की पूजा की जाती है।

5) तीजा (तीजा–पोरा) – तीजा छत्तीसगढ़ की महिलाओं का प्रमुख पर्व है इस दिन विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुख समृद्ध के लिए व्रत रखती है।

तीजा की परंपराएं –
1) महिलाएं निर्जला व्रत रखती है।
2) पारंपरिक गीत गाए जाते है।
3) झूला झूलने और लोकनृत्य की परंपरा होती है।
4) महिलाएं मायके जाकर उत्सव मनाती है।

6) बस्तर दशहरा – बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ का सबसे प्रसिद्ध और अनोखा पर्व है यह जगदलपुर क्षेत्र में लगभग 75 दिनों तक मनाया जाता है और विश्व के सबसे लंबे उत्सवों में से एक माना जाता है। परंपरिक वस्तुओं और हस्ताशिल्प की बिक्री होती है।

धार्मिक महत्व – यह त्यौहार भगवान राम की विजय से नही बल्कि देवी दंतेश्वरी की पूजा से जुड़ा हुआ है बस्तर क्षेत्र के आदिवासी समुदास इसे बड़े उत्साह से मनाते है।

मुख्य आयोजन –
1) रथयात्रा
2) देवी पूजा
3) पारंपरिक नृत्य और संगीत
4) आदिवासी समुदायों की भागीदारी

महत्व –
1) आदिवासी संस्कृति का प्रतीक।
2) धार्मिक आस्था और सामूहिक एकता का उत्सव।
3) पोला किसानों का त्यौहार है जो भाद्रपाद अमावस्या के दिन मनाया जाता है।

त्यौहार की परंपरा – इस दिन किसान अपने बैलों को सजाते है उनकी पूजा करते है और उन्हें विशेष भोजन दिया जाता है बच्चे मिट्टी या लकड़ी के बैलों से खेलते है।

महत्व – 1) कृषि में पशुओं के योगदान के प्रति आभार
2) पशु संरक्षक की भावना
3) ग्रामीण जीवन की परंपरा का संरक्षण

कर्मा – कर्मा त्यौहार मुख्यतः आदिवासी समुदायों द्वारा मनाया जाता है और यह अच्छी फसल और समृद्धि के लिए मनाया जाता है।

मुख्य परंपरा – 1) कर्मा वृक्ष की पूजा
2) सामूहिक नृत्य और गीत

महत्व – 1) प्राकृति और वृक्षों के संरक्षण का सदेंश
2) सामूहिक सामाजिक जीवन का प्रतीक

छत्तीसगढ़ के त्यौहार (महतो/महत्व के कितने प्रकार के होते है)

1. **लोक पर्व** – जैसे हरेली छेरछेरा तीजा–पोरा देवारी
2. **जनजातीय पर्व** – जैसे मडई गोनचा नवाखाई
3. **धार्मिक/राष्ट्रीय पर्व** – जैसे होली, दिवाली, दशहरा, रामनवमी

छत्तीसगढ़ की सांस्कृति – छत्तीसगढ़ की संस्कृति ग्रामीण जीवन और जनतातीय परपंराओं से प्रभावित है यहाँ लोकगीत लोकनृत्य और पांरपरिक वेशभूषा महत्व है। त्यौहारों के समय पूरे राज्य में उत्सव का वातावरण रहता है।

त्यौहारों का महत्व – छ.ग. में त्यौहारों का विशेष महत्व है।

मुख्य कारण – 1) सामाजिक एकता 2) सांस्कृतिक परंपरा का संरक्षण 3) प्राकृति के प्रति सम्मान 4) सामूहिक उत्सव

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव – राज्योत्सव हर साल 1 नवम्बर को मनाया जाता है। यह छत्तीसगढ़ राज्य के गठन की याद में आयोजित किया जाता है।

समाजिक महत्व – त्यौहार समाज में भाईचारा और एकता को बढ़ाने ये लोगों को एक साथ लाने का काम करते है।

सांस्कृतिक महत्व – त्यौहार लोक सांस्कृतिक और परंपराओं को जीवित रखते है।
1) लोकनृत्य (जैसे सुआ नृत्य, पंथी नृत्य)
2) लोकगीत
3) पारंपरिक वैशभूषा

कृशि से जुड़ा महत्व – छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है इसलिए यहाँ कई त्यौहार खेती से जुड़े होते है।

उदाहरण – 1) **हरेली** – खेती शुरूआत का त्यौहार
2) **पोला** – बेलो की पूजा
3) **छेर–छेरा** – फसल कटाई की खुशी ये त्यौहार किसानों के जीवन से जुड़े होते है।

जनजातीय संस्कृतिक का महत्व – छत्तीसगढ़ में कई जनजातीय समुदाय रहते है और त्यौहारों के माध्यम से वे अपनी परंमपराएं और देवी देवदाताओं की पूजा करते है।

आदिवासी परम्पराएं एवं मान्यताएं – इस खण्ड में जनजातीय जीवन की परम्पराओं और धार्मिक सांस्कृतिक विश्वासों का अध्ययन किया जाएगा।

देवगुड़ी पूजा कुटुम्ब देवता वनदेवता और ग्राम देवी परम्परा –

छत्तीसगढ़ के जनजातीय जीवन की नीव उनके धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक आस्थाओं पर टिकी हुई है। जिनका स्वरूप अत्यंत जीवत प्रकृतिधारक और सामुदायिक है इन विश्वासों की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से देवगुड़ी पूजा कुटुम्बा देवता सदेवता और ग्राम देवी की परम्पराओं में होती है जनजातियाँ जैसे गोंड मुरिया भतरा हल्बा बेंगा उपरांत आदि इन परम्पराओं का गहन पालन करते है जो उनके सामाजिक संगठन कृषि जीवन और प्राकृतिक के साथ सामंजस्य को दर्शाते है, देवगुड़ी जनजातीय धार्मिक परम्परा का सबसे पवित्र स्थल होता है। यह गांव के भीतर या समीप स्थित होता है जहाँ वशानुगत या ग्रामदेवता की स्थापना की जाती है। देवगुड़ी आमतौर पर एक छोटा मिट्टी या लकड़ी का मंदिर होता है। जिसके भीतर लकड़ी की मूर्तियां पत्थर के प्रतीक या कोई चिन्ह जैसे त्रिशूल घंटी ध्वज आदि स्थापित होते है। यहाँ साल में एक या दो बार विशेष पूजा बलिप्रथा बेगा (ओझा) द्वारा मंत्रोच्चारण तथा सामूहिक भजन नृत्य होता है। यह परम्परा न केवल धार्मिक आस्था बल्कि सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक उत्तराधिकार का भी केन्द्र है।

कुटुम्ब देवता की परम्परा जनजातीय पारवारी में वंश के रक्षक देवता के रूप में प्रचलित है। प्रत्येक कुटुम्ब या वंश का अपना एक देवता होता है। जिसकी पूजा विशेष अवसरों पर जैसे विवाह सकंट निवारण फसल कटाई आदि में की जाती है यह पूजा आमतौर पर घर के किसी पवित्र कोने या आगंन में होती है इसमें धान महुआ मदिरा लाल कपड़ा मिट्टी के दीपक जैसे सामग्ती का प्रयोग होता है जो परम्परा और प्रकृति से जुड़ी हुई होती है।

वनदेवता की उपासना जनजातियों का प्राकृतिक उपासना प्रणाली का प्रतीक है जनजातियाँ जंगल को जीवित इकाई मानती है और वहाँ निवास करने वाले सदैव मृत पितर या शक्तियाँ उनकी धार्मिक कल्पनाओं का हिस्सा होती है। वनों में प्रवेश से पूर्व या किसी वृक्ष की कटाई से पहले वे वनदेवता से अनुमति मांगते है यह प्रकृति के प्रति सवेंदशीलता श्रद्धा का परिवापक है।

ग्राम देवी (जैसी माँ दंतेश्वरी माँ चंद्रहासिनी माँ, शीतला माँ) की पूंजा जनजातीय ग्रामों में सामूहिक सुरक्षा महामारी से रक्षा और समृद्धि के लिए की जाती है। ग्राम देवी के लिए स्थायी मंदिर या स्थल बनाए जाते है यहाँ वार्षिक जत्रा बलिप्रथा, लोकनृत्य और मेलों का आयोजन होता है इसमें सामाजिक समरस्ता और धार्मिक सृदृढ़ होती है।

परम्पराओं में पुरूष और महिला दोनों की समान भागीदारी वनो जल स्त्रोतो और भूमि के प्रति गहन श्रद्धा और कर्तव्यों की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इन धार्मिक सांस्कृतिक विश्वासों का महत्व केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि सामाजिक संगठन प्राकृतिक संसाधनों के सरक्षण तक सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में भी है। आज जबकि आधुनिकता और धर्मातरण की चुनौतियाँ सामने है फिर भी यह परम्पराएं छत्तीसगढ़ के जनजातियां समाज की सांस्कृतिक आत्मा की संरक्षित रखे हुए है।

घोटुल संस्था (विशेषकर मुरिपा जनजाति में)

छत्तीसगढ़ की जनजातिया संस्कृतिक घोटुल संस्था एक विशिष्ट और अद्वितीय सांस्कृतिक व्यवस्था है जो विशेषतः मुरिया जनजाति (बस्तर अचंल) में प्रचलित है यह संस्था न केवल सामाजिक संगठन की एक रचना है बल्कि युवाओं के चरित्र निर्माण सामाजिक उत्तरदायित्व यौन शिक्षण लोकजीवन के अभ्यास और सांस्कृतिक परम्पराओं व हस्तांतरण का सशक्त मंच भी है।

घोटुल की सामाजिक संरचना और उद्देश्य –

घोटूल संस्था में प्रवेश एक निपमबद्ध विधि से होता है जहाँ लड़को को चेलिक और लड़कियों को मोटियारीन कहा जाता है। इसका चुने हुए सरदार चेलिक और मुख्य मोटियारीन करते है यह युवा अनुशासन कर्तव्यबोध सहयोग लोकनृत्य लोकगीत लोककला शिष्टाचर और पारंपरिक ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करते है।

यह संस्था विवाह से पूर्व की सामाजिक और यौन शिक्षा का भी केन्द्र होती है यहाँ परम्पराएं आदान प्रदान आत्मनिर्भरता लज्जाहिनता नहीं बल्कि गरिमा और स्वीकृति के साथ विकसित होती है। हालांकि आधुनिक दृष्टिकोण से इसे विवादस्पद माना जाता है परंतु पारंपरिक मुरिया समाज में यह नैतिक अनुशासन और सामुदायिक मर्यादा की रक्षा करता रहता है।

घोटुल में सांस्कृतिक गतिविधियां – घोटुल में रात्रिकालीन लोकगीतों नृत्य वाद्ययंत्रो के अभ्यास और विभिन्न पर्वो की तैयारी होती है समूह भावना सांस्कृतिक पहचान और परम्परा के प्रति गर्व का विकास करती है।

न्याय और अनुशासन –

घोटुल संस्था एक न्यायिक इकाई के रूप में भी कार्य करती है। अगर कोई चेलिक या मोटियारीन नियमों का उल्लघंन करता है तो उसे दंड स्वरूप शारीरिक श्रम गीत गवाना उपवास आदि करना पड़ता है। यह आत्मविकास और सुधारत्मक दृष्टिकोण पर आधारित व्यवस्था है जो युवाओं को आत्मनुशासित बनाती है।

आधुनिक संदर्भ में घोटुल – आज शिक्षा मिशनरी प्रभाव मीडिया और शहरीकरण के कारण घोटुल संस्था कमजोर होती जा रही है कुछ जगहों पर यह सांस्कृतिक विरासत के रूप में संरक्षित है। लेकिन कई क्षेत्रों में इसका पारंपरिक स्वरूप लुप्त हो रहा है। यद्यापि अनेक सांस्कृतिक शोधकर्ताओं और मानव विज्ञानों विद्ववानों ने घोटुल के लोकतांत्रिक नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अनुकरणीय संस्था माना है।

घोटुल संस्था केवल एक युवाशाला नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति की गहन सामाजिक सांस्कृतिक समझ सामूहिकता अनुशासन शिक्षा और लोक परम्पराओं के संरक्षण का विशिष्ट माध्यम है यह आज भी आदिवासी अस्मिता विरासरत की पहचान का प्रतीक है।

मृत्यु जन्म और विवाह के संदर्भ में जनजातीय अनुष्ठान – छत्तीसगढ़ की जनजातियां – विशेषतः गोंड़ बैगा, उराव, मुरिया भतरा, हब्बा आदि अपनी विशिष्ट धार्मिक सांस्कृतिक जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध है जिसमें जीवन के तीन प्रमुख संस्कार जन्म विवाह और मृत्यु अत्यंत विशिष और सामुदायिक रूप से संपन्न होते है। इन अनुष्ठानों में उनकी लोक मान्यताएँ देवी–देवताओं में विश्वास प्रकृति से संबंध और आत्मीय सामाजिक संरचना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

जन्म संस्कार – जनजातीय समाज में जन्म को पवित्र घटना माना जाता है। शिशु जन्म को पश्चात् ग्रह देवता ग्राम देवी और कुल देवी को सूचित करने हेतु विशिष्ट अनुष्ठान किये जाते है प्रसव ग्रृह प्रायः अलग होता है और वहाँ धूप माटी नीम के पतो एवं मिट्टी दीपक का प्रयोग किया जाजा है।

विवाह अनुष्ठान – जनजातीय विवाह प्रणाली बहुत हद तक सहज व्यवहारिक और सामूहिक भागीदारी पर आधारित होती है। विवाह के पूर्व वर एवं वधु पक्ष की सहमति गोत्र की जांच एवं कभी कभी विवाह परीक्षण जैसे रिति रिवाज होते है। प्रसिद्ध विवाह प्रकोरा में चोरी विवाह धूत्क विवाह विवाह पंक्ति गीत, लिंगा पूजा आदि की परम्परा है विवाह अनुष्ठानों में मंडप सज्जा चावल अपके, नारिपल मंदिर चठ्ठान गान एवं नृत्य का अत्यंत महत्व होता है। विवाह उत्सव सामूहिक भोज और ग्राम देवता के आर्शीवाद के सम्पन्न होता है।

मृत्यु अनुष्ठान – मृत्यु जनजातीय संस्कृति में केवल जीवन का अंत नहीं बल्कि आत्मा के अगले चरण में प्रवेश के रूप में देखा जाता है शव का दाह या भू–समाधि प्रचलन में है और कई बार उसे जंगल या नदी के किनारे भी दफनाया जाता है।

आधुनिकता बनाम पारंपरिक विश्वास – हालांकि शिक्षा और आधुनिक चिकित्सा के प्रचार–प्रसार से इन परम्पराओं में कमी आई है परंतु ग्रामीण क्षेत्रों विशेषकर बस्तर सरगुजा कांकेर कोरिया आदि आदिवासी बहुल इलाकों में आज भी ओझा गुनी पर विश्वास प्रचलित है।

इन परमपराओं को अंधविश्वास कहकर नकारना आसान है लेकिन सांस्कृतिक मानवविज्ञान का दृष्टिकोण यह कहता है कि यह विश्वास प्रणाली जनजातीय समाज की सामूहिक स्मृति परम्परा और सामाजिक नियंत्रण का हिस्सा रही है यह एक वैकल्पिक न्याय औश्र उपचार पद्धति भी रही जिसमें समाज में सधंरण के समाधन अप निवारण और सामूहिक विश्वास का निर्माण होता है।

लोकगीतो मुखौटो जनजातीय चित्रकला और वाधयंत्रो का सांस्कृतिक स्थान – छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति केवल जीवनशैली परमपराओं या अनुष्ठानों तक सीमित नहीं बल्कि यह एक समृद्ध कलात्मक अभिव्यक्ति में भी उजागर होती है जिसका प्रतीक है। लोकगीत मुखौटे चित्रकला और पांरपरिक वाघयंत्र से सभी कलात्मक रूप जनजातीय समाज की धार्मिक आस्था ऐतिहासिक स्मृति प्रकृति के प्रति समान तथा सामाजिक सहभागिता के जीवत् प्रमाण है।

लोकगीतों सांस्कृतिक भूमिका – जनजातीय लोकगीत छत्तीसगढ़ की लोक परमपरा की आत्मा के ये गीत केवल मनोरंजन के साधन है बल्कि एवं सामाजिक दस्तावेज की भाति कार्य करते है, जो इतिहास परमपरा मान्यताओं और संघर्षो को शब्द्ध बद्ध करते है।

प्रसिद्ध लोकगीत में सुहाग गीत विवाह गीत खेती बाड़ी के गीत देवी देवताओं को समर्पित अराधना गीत जननायक गीत (जैसे गुरू घासीदास या वीर नारायण सिंह) पर आधारित प्रस्तुत है।

गोंड जनजाति का लिंग गीत तथा मुरिया समुदाय का मांडर गीत जनजातीय अरिमता और समूहिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

इन गीतों की मौखिक परमपरा स्मृति संवर्धन की दृष्टि से अद्वितीय है गीतों के माध्यम से लोक ज्ञान परमपरा लोक धर्म और जीवन दृष्टि पीढ़ियों तक स्थानांतरित होती है।

मुखौटों का प्रतीकात्मक महत्व – छत्तीसगढ़ की जनजातियों विशेष रूप से मुरिया हल्बा और भतरा समुदाय में मुखौटे एक विशेष सांस्कृतिक भूमिका निभाते है ये मुखौटे धार्मिक अनुष्ठानों नृत्य–नाट्य प्रस्तुतियों उत्सवों और आत्मा – पूजन में प्रस्तुत होते है। मुखौटे लकड़ी–मिट्टी या बांस बनाए जाते है और रंग बिरंगे होते ही इन पर पशु आकृतियों देवताओं पूर्वजों या मिथकीय पात्रों की छवियां उकेरी जाती है मुखौटी के माध्यम से पारिवारिक शक्ति सामाजिक संदेश और सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता व्यक्ति की जाती है।

जनजातीय चित्रकला दीवारों पर रची संस्कृति – छत्तीसगढ़ की जनजातीय चित्रकला विशेषकर गोंड बैगा और उरांव जनजातीयों की अत्यंत समृद्ध एवं प्रतीकात्मक है यह चित्रकला आमतौर पर माटी से लिपि दीवारों फर्श पर त्यौहारों के समय बनाई जाती है।

प्रमुख चित्रों में वन्य जीव वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा देवी देवता हाथी, बेल मनुष्य आकृतियां शामिल होती है गोंड चित्रकला में लहरदार रेखाएं और बारिक बिन्दुओं से आकृतियों को सजाने की परमपरा जो जीवन की गति और लक्ष्य का प्रतीक मानी जाती है।

चित्रकला में प्रयुक्त रंग आमतौर पर प्राकृतिक होते है लाल मिट्टी हल्दी कोयला महुआ की राख आदि से तैयार किए जाते है ये चित्र जीवन की विविध पक्षों जन्म कृषि उत्सव विवाह मृत्यु का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करते है।

जनजातीय वाधयंत्र और उनका सांस्कृतिक संदर्भ – जनजातीय संगीत वाधयंत्रो के बिना अधूरा है। छत्तीसगढ़ के जनजातीय समाज में नृत्य और संगीत न केवल आनंद और सांस्कृतिक स्मृति का भी सशक्त आधार है।

प्रमुख वाधयंत्रों में भाामिल है मांडर – मुरिया और गोंड समुदाय में विवाह त्यौहारों और शिकार उत्सवों में प्रयुक्त।

नगाड़ा – युद्ध चेतावनी और देवी पूजा अवसर पर।

टिमकी और ढोलकी – सामान्य उत्सवों और गीतो के साथ

बंसी बासुरी तुरही थाली घुंघरू – नृत्य संगीत के भाग

बासा या डमरू – ओझा गुनी की पूजा में प्रयोग।

इन वाध यंत्रो की ध्वनि केवल संगीतात्मक भाव जगाती है बल्कि समूह को एकसूत्र में बांधती जिसमें सांस्कृतिक सवांद और सामाजिक सामांजस्य की भावना पैदा होती है।

छत्तीसगढ़ की जनजातीय परमपरा में लोकगीत मुखौटे चित्रकला और वाधयंत्र केवल सांस्कृतिक रूप नहीं है बल्कि समाज की आत्मा विचारधारा स्मृति और चेतना के वाहक है यह कलात्मक माध्यम जनजातीय समाज को उसकी जड़ो जोड़ते है उसकी पहचान को मजबूत करते है और परमपरा तथा आधुनिकता के बीच शेतु का कार्य करते है।

त्यौहारों का सामाजिक महत्व –

छत्तीसगढ़ के त्यौहार केवल धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण।

समाजिक महत्व –

1) समाज में एकता बढ़ाते है।
2) पारम्परिक संस्कृति को जीवित रखते है।
3) ग्रामीण समाज में सहयोग की भावना बढ़ाते है।
4) लोगों को आपसी मेल मिलाप का अवसर देते है।

आर्थिक महत्व –

छत्तीसगढ़ के त्यौहारों का आधिक महत्व भी है।
1) मेलों में व्यापार और बाजार लगते है।
2) स्थानीय हस्तशिल्प और कला को बढ़ावा मिलता है।
3) पर्यटन को प्रोत्साहन मिलता है।

सांस्कृतिक महत्व –

त्यौहारों के माध्यम से छत्तीसढ़ की संस्कृति और परम्परा सुरक्षित रहती है।
1) लोकगीत और लोकनृत्य का प्रदर्शन
2) पारपरिक वेशभूषा का उपयोग
3) जनजाती संस्कृति का संरक्षण

निष्कर्ष –

छत्तीसगढ़ के त्यौहार राज्य की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है ये त्यौहार केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित करते है हरेली, पोला, तीजा, नवाखाई, और बस्तर दशहरा जैसे त्यौहार छत्तीसगढ़ की समृद्ध परंपरा और संस्कृति विरासरत को दर्शाते है। इन त्यौहारों के माध्यम से समाज में एकता भाईचारा और सांस्कृतिक गौरव की भावना मजबूत होती है इसलिए इन परम्पराओं का सरंक्षण और संवर्धन अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ –

1) छत्तीसगढ़ के प्रमुख पर्व त्यौहार सांस्कृतिक लेख
2) छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियां सांस्कृतिक उथान।
3) शर्मा आर.के. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर नई दिल्ली नेशनल पब्लिकेशन
4) कुमार प्रमोद भारतीय लोक कला और सांस्कृतिक वाराणसी सांस्कृतिक प्रकाशन
5) सोंधिया बी.एल. मल्हार और सिरपुर एक स्थापत्य अध्ययन रायपुर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका।
6) सा.डी.एन. भारत की लोक संस्कृति राष्ट्रीय पुस्तक भारत।

इन्टरनेट –

hi.wikipedia.org/wiki/छत्तीसगढ़ का उव्पद

पत्र पत्रिकाएँ –

1) चाद (1920) लखनऊ से।
2) माधुरी (1922) लखनऊ से
3) मतवाला (1923) निराला और महादेव प्रसाद सेठ द्वारा संपादित
4) विशाल भारत (1928) बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित
5) विशाल भारत 1928 बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित
6) विशाल भारत 1928 बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित।